

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 12 — अघासुर-वध

5 October 2026



प्रातःकाल कृष्ण अपने सींग से अपने साथियों और बछड़ों को जगाते हैं और हजारों ग्वालबालों को आनन्दमय वनभोज के लिए वन में ले जाते हैं — वही प्रभु जिन्हें योगी नहीं पा सकते, ब्रज के बालकों के साथ क्रीड़ा करते हुए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गडम् में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह बारहवाँ अध्याय एक उज्ज्वल प्रातःकालीन वनयात्रा की कथा कहता है जो कृष्ण की सबसे विस्मयकारी लीलाओं में से एक बन जाती है। प्रातः उठकर कृष्ण अपने ग्वालबाल साथियों और बछड़ों को बुलाते हैं और हजारों बालकों को वनभोज के लिए वन में ले जाते हैं, वन को संगीत, खेल और हँसी से भर देते हैं। किन्तु असुर अघासुर — मारे गए पूतना और बकासुर का भाई, कंस का भेजा हुआ — एक योजन लम्बे अजगर का रूप धरकर मार्ग पर पड़ जाता है, और उन्हें निगलने के लिए अपना गुफा जैसा मुख खोल देता है। उस मुख को सुन्दर गुफा समझकर विश्वासी बालक भीतर चले जाते हैं; और सबके हृदय में बसने वाले कृष्ण उन्हें बचाने भीतर प्रवेश करते हैं, असुर को भीतर से नष्ट कर देते हैं और अपने सब साथियों को सुरक्षित बाहर ले आते हैं — जबकि असुर से एक अद्भुत ज्योति उठकर स्वयं प्रभु में विलीन हो जाती है।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 12 (द्वादश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: अघासुर-वध
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए); तत्पश्चात् सूत गोस्वामी द्वारा कथित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित; नैमिषारण्य में एकत्र ऋषिगण
- मुख्य स्थल: व्रज में वृन्दावन का वन और चरागाह
- केंद्रीय विषय: कृष्ण और ग्वालबालों का प्रातःकालीन वनभोज; व्रजवासियों का महान् सौभाग्य; अघासुर का अजगर रूप में घात; बालकों और बछड़ों का उद्धार; और प्रभु के स्पर्श से असुर की मुक्ति
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 12, श्लोक 1-44
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

ग्यारहवें अध्याय में व्रज का समाज वृन्दावन चला गया, जहाँ दोनों बालक बछड़ों के रक्षक बने, और कृष्ण ने उन्हें नष्ट करने आए भाई-असुरों वत्सासुर तथा बकासुर का वध किया। यह अध्याय उन्हीं बछड़े चराने के दिनों को एक वनभोज और उसी परिवार के तीसरे असुर अघासुर के आगमन के साथ आगे बढ़ाता है।

वनभोज

एक प्रातः वन में भोजन करने की इच्छा से कृष्ण भोर में उठे और अपने सींग को मधुर स्वर में बजाकर उन्होंने अपने ग्वालबाल साथियों और बछड़ों को जगाया। हजारों बालक हर्ष से निकल आए, प्रत्येक अपने बछड़ों को आगे हाँकते हुए, अपना नन्हा थैला, छड़ी, सींग और बाँसुरी लिए। अपने असंख्य बछड़ों को एक बड़े झुंड में मिलाकर बालक इधर-उधर घूमते हुए बाल-क्रीड़ाएँ करते रहे। यद्यपि वे पहले से ही वन के फलों, फूलों, मोरपंखों और रंगीन धातुओं से सजे थे, फिर भी वे एक-दूसरे को और सजाते; एक-दूसरे के भोजन के थैले चुराकर दूर फेंक देते और हँसते हुए लौटा देते; और जब कभी कृष्ण वन की शोभा देखने आगे बढ़ जाते, तब हर बालक उन्हें पहले छूने के लिए होड़ करता।

शुकदेवजी इन बालकों के सौभाग्य पर आश्चर्य से रुक जाते हैं। भगवान् के चरणों की धूलि, वे कहते हैं, अनेक जन्मों के कष्टों से स्वयं को साधने वाले बड़े-बड़े योगियों को भी नहीं मिलती; फिर भी वही प्रभु ग्वालबालों के समक्ष उनकी आँखों के प्रत्यक्ष विषय और उनके खेल के साथी बनकर खड़े थे। भला, व्रजवासियों के भाग्य का वर्णन कैसे किया जाए?

यत्पादपांसुर्बहुजन्मकृच्छ्रतो
धृतात्मभिर्योगिभिरप्यलभ्यः ।
स एव यद् दृग्विषयः स्वयं स्थितः
किं वर्ण्यते दिष्टमतो व्रजौकसाम् ॥ १२ ॥

*yat-pāda-pāṁsur bahu-janma-kṛcchrato dhṛtātmabhir yogibhir apy alabhyaḥ sa eva yad-dṛg-
viśayaḥ svayaṁ sthitaḥ kiṁ varṇyate diṣṭam ato vrajaukasām*

अर्थ: जिनके चरणों की धूलि अनेक जन्मों के कष्टों से आत्मसंयमी बड़े योगियों को भी नहीं मिलती, वही प्रभु साक्षात् ग्वालबालों की दृष्टि के विषय बनकर खड़े थे — तब व्रजवासियों के भाग्य का वर्णन कैसे किया जाए? (स्कन्ध 10, अध्याय 12, श्लोक 12)

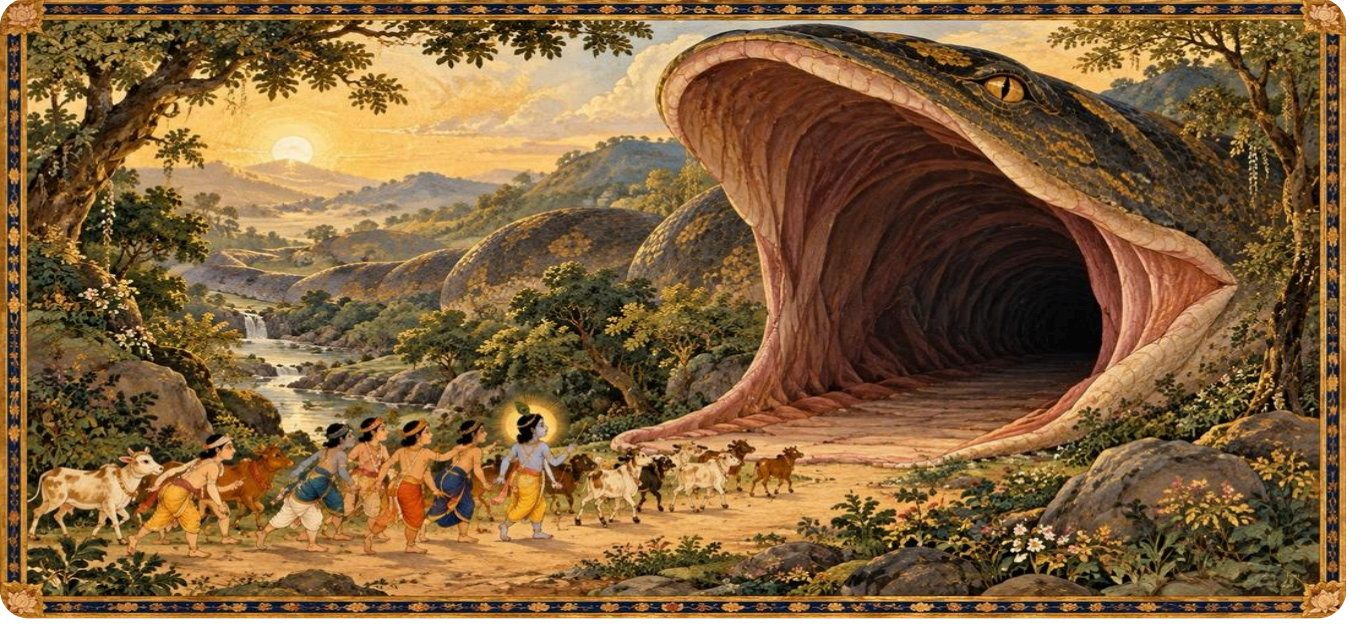
अघासुर की घात

ठीक उसी समय वहाँ एक भयंकर दैत्य का आगमन हुआ — अघासुर, जिससे बालकों की यह निर्मल क्रीड़ा सही न गई। वह राक्षसी पूतना और बकासुर का छोटा भाई था, और कंस का भेजा हुआ था; उसकी भीषण शक्ति के सामने स्वयं स्वर्गलोक के देवता भी सदा सशक्त रहते थे। कृष्ण के नेतृत्व में बालकों को देखकर अघासुर ने निश्चय किया कि वह इस बालक को उसके सब साथियों सहित मारकर अपने भाई-बहन का बदला लेगा।

अथाघनामाभ्यपतन्महासुर-
स्तेषां सुखक्रीडनवीक्षणाक्षमः ।
नित्यं यदन्तर्निजजीवितेषुभिः
पीतामृतैरप्यमरैः प्रतीक्ष्यते ॥ १३ ॥

*athāgha-nāmābhyapatan mahāsuras teṣāṁ sukha-kṛīḍana-vīkṣaṇākṣamaḥ nityaṁ yad-antar nija-
jīvitepsubhiḥ pītāmṛtair apy amaraiḥ pratīkṣyate*

अर्थ: तब अघ नामक महान् असुर प्रकट हुआ, जो बालकों की सुखमयी क्रीड़ा को देख न सका — वह, जिसकी अमृतपायी अमर देवता भी सदा अपने प्राणों के भय से प्रतीक्षा करते रहते थे। (स्कन्ध 10, अध्याय 12, श्लोक 13)



महान् असुर अघासुर, पूतना और बक का भाई, एक योजन लम्बे अजगर का रूप धरकर मार्ग पर पड़ जाता है, और बालकों को निगलने के लिए अपना मुख पर्वत की गुफा जैसा खोल देता है (श्लोक 13-17)।

यह सोचकर कि कृष्ण को प्राणों से प्रिय ये बालक एक बार नष्ट हो जाएँ तो सारा व्रज मृतप्राय हो जाएगा, असुर ने पूरे एक योजन लम्बा, किसी विशाल पर्वत जैसा भयंकर अजगर-शरीर धारण किया। अपना गुफा जैसा मुख फैलाकर — नीचे का ओठ भूमि पर और ऊपर का ओठ बादलों को छूता, दाढ़ें पर्वत-शिखरों जैसी और श्वास दावाग्नि की गर्म वायु जैसी — वह उन सबको निगलने की आशा से मार्ग पर पड़ गया।

बालकों का मुख में प्रवेश

उस विशाल खुले मुख को देखकर भोले बालकों ने उसे वृन्दावन की एक सुन्दर रचना समझा और खेल-खेल में कल्पना करने लगे कि वह ठीक किसी अजगर के मुख जैसा दिखता है। ‘देखो, मित्रो,’ वे हँसे, ‘क्या वह किसी जीव की थूथन नहीं, मानो हमें निगलने को खुली हो? यदि यह असुर है, तो अवश्य ही बक की भाँति तुरन्त नष्ट हो जाएगा।’ और बकारि कृष्ण के मुख की ओर देखते हुए, हँसते और ताली बजाते हुए, वे निर्भय भीतर चले गए।



असुर के मुख को वृन्दावन की एक सुन्दर रचना समझकर बालक उस पर हँसी-ठिठोली करते हुए निर्भय भीतर चले जाते हैं, इस विश्वास से कि कृष्ण उनकी पहले की भाँति रक्षा करेंगे (श्लोक 18-26)।

सत्य को जानते हुए — क्योंकि वे समस्त प्राणियों के हृदय में बसते हैं — कृष्ण अपने साथियों को रोकना चाहते थे; किन्तु तब तक बालक और उनके बछड़े असुर के उदर में प्रवेश कर चुके थे, और असुर केवल अपना जबड़ा बन्द करने की प्रतीक्षा में था, अपने मारे गए भाई-बहन को स्मरण करते हुए। अपने असहाय साथियों को, जिनका कोई और रक्षक न था, मानो अपने हाथ से छूटकर मृत्यु के मुख में गिरा देखकर प्रभु करुणा से द्रवित हो गए और सोचने लगे कि एक साथ दो कार्य कैसे सिद्ध हों — दुष्ट असुर का वध और भोले बालकों की रक्षा।

कृत्यं किमत्रास्य खलस्य जीवनं
न वा अमीषां च सतां विहिंसनम् ।
द्वयं कथं स्यादिति संविचिन्त्य
ज्ञात्वाविशत्तुण्डमशेषदृग्घरिः ॥ २८ ॥

*kṛtyaṁ kim atrāśya khalasya jīvanam na vā amīṣāṁ ca satāṁ vihiṁsanam dvayaṁ katham syād
iti saṁvicintya jñātvāviśat tuṇḍam aśeṣa-dṛg ghariḥ*

अर्थ: ‘यहाँ क्या करना उचित है — इस दुष्ट का वध, या इन भोले बालकों की रक्षा? दोनों एक साथ कैसे सम्भव हों?’ ऐसा विचार करते हुए और सब कुछ जानते हुए सर्वदर्शी भगवान् हरि असुर के मुख में प्रवेश कर गए। (स्कन्ध 10, अध्याय 12, श्लोक 28)

उद्धार और असुर का पतन

इस पर बादलों की ओट में छिपे देवता भय से ‘हाय! हाय!’ पुकार उठे, जबकि अघ के मित्र कंस आदि असुर हर्षित हुए। यह सुनकर अविनाशी भगवान् कृष्ण ने, यह देखकर कि असुर भीतर बालकों और बछड़ों को कुचलना चाहता है, तुरन्त असुर के कण्ठ में स्वयं को बड़ा लिया। असुर का विशाल शरीर, मार्ग अवरुद्ध और आँखें बाहर निकली हुई, तड़पने लगा; उसके प्राण, बाहर निकलने का मार्ग न पाकर, अन्ततः उसके सिर के

ऊपरी भाग को फोड़कर बाहर निकल गए। तब कृष्ण ने अपनी दृष्टि से मृत बछड़ों और बालकों को पुनर्जीवित कर उन सबको असुर के मुख से बाहर निकाल लिया।

तेनैव सर्वेषु बहिर्गतेषु
प्राणेषु वत्सान् सुहृदः परेतान् ।
दृष्ट्या स्वयोत्थाप्य तदन्वितः पुन-
र्वक्त्रान्मुकुन्दो भगवान् विनिर्ययौ ॥ ३२ ॥

*tenaiva sarveṣu bahir gateṣu prāṇeṣu vatsān suhṛdaḥ paretān dṛṣṭyā svayotthāpya tad-anvitaḥ
punar vaktrān mukundo bhagavān viniryayau*

अर्थ: जब असुर के प्राण बाहर निकल गए, तब भगवान् मुकुन्द ने अपनी दृष्टि से मृत बछड़ों और अपने साथियों को उठाकर, उनके सहित असुर के मुख से पुनः बाहर निकल आए। (स्कन्ध 10, अध्याय 12, श्लोक 32)



असुर के कण्ठ में प्रवेश कर कृष्ण इतना बढ़ जाते हैं कि असुर फट पड़ता है; फिर अपनी दृष्टि से अपने साथियों और बछड़ों को पुनर्जीवित कर वे सबको सुरक्षित बाहर ले आते हैं (श्लोक 28-32)।

अघासुर की मुक्ति

तब उस अजगर-असुर के शरीर से एक अद्भुत महान् ज्योति उठी, जो अपने तेज से समस्त दस दिशाओं को प्रकाशित कर रही थी; वह प्रभु के बाहर आने तक आकाश में ठहरी रही, और फिर देखते हुए देवताओं के सामने स्वयं कृष्ण में विलीन हो गई। हर्षित होकर देवताओं ने पुष्प बरसाए, अप्सराएँ नाचें, देवगण गाने लगे, गन्धर्व बाजे बजाने लगे, और ब्राह्मण जय-जयकार के साथ स्तुति करने लगे। पास से इस महान् स्तुति-उत्सव को सुनकर ब्रह्मा भी आ पहुँचे और उस लीला को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। और हे राजन्, उस अजगर की सूखी खाल कई दिनों तक व्रजवासियों के लिए एक अद्भुत गुफा और क्रीड़ास्थल बनी रही।

बचपन की इस लीला को — कृष्ण द्वारा स्वयं को और अपने साथियों को मृत्यु के मुख से बचाने को — आश्चर्य से भरे बालकों ने व्रज में तभी बताया जब वे बड़े हो गए। शुकदेवजी आश्चर्य से कहते हैं कि परम स्रष्टा के लिए ऐसा करना कोई विचित्र बात नहीं; क्योंकि अघासुर भी, जिसके सारे पाप भगवान् के स्पर्श मात्र से धुल गए, उस रूप-साम्य को प्राप्त हो गया जो पवित्र जनों को भी अत्यन्त दुर्लभ है।

नैतद् विचित्रं मनुजार्भमायिनः

परावराणां परमस्य वेधसः ।

अघोऽपि यत्स्पर्शनधौतपातकः

प्रापात्मसाम्यं त्वसतां सुदुर्लभम् ॥ ३८ ॥

naitad vicitram manujārbha-māyinaḥ parāvarāṇāṁ paramasya vedhasaḥ agho 'pi yat-sparśana-dhauta-pātaḥ prāpātma-sāmyaṁ tv asatāṁ sudurlabham

अर्थ: परावर के परम स्रष्टा के लिए, जो मनुष्य-बालक रूप में क्रीड़ा करते हैं, यह कोई विचित्र बात नहीं; क्योंकि अघ भी, जिसके सारे पाप भगवान् के स्पर्श से धुल गए, उस रूप-साम्य को प्राप्त हुआ जो अपवित्र जनों के लिए अत्यन्त दुर्लभ है। (स्कन्ध 10, अध्याय 12, श्लोक 38)



अघासुर के शरीर से एक अद्भुत ज्योति उठती है, समस्त दिशाओं को प्रकाशित करती है और कृष्ण में विलीन हो जाती है; उनके स्पर्श से पवित्र होकर वह असुर भी एक दुर्लभ मुक्ति पाता है, और देवगण पुष्प बरसाते हैं (श्लोक 33-38)।

परीक्षित का प्रेममय प्रश्न

सूत गोस्वामी ने नैमिषारण्य के ऋषियों को बताया कि किस प्रकार राजा परीक्षित, अपने रक्षक की इस अद्भुत कथा को सुनकर, इतने मुग्ध हुए कि उन्होंने और सुनना चाहा। उन्हें आश्चर्य हुआ कि कृष्ण के बचपन में की गई लीला को बालकों ने एक वर्ष बाद, बड़े होने पर ही क्यों बताया। निश्चय ही, उन्होंने कहा, यह भी भगवान् की माया ही होगी। शुकदेवजी के मुख से बार-बार कृष्ण-कथा के अमृत का पान कर स्वयं को परम

सौभाग्यशाली बताते हुए उन्होंने ऋषि से इसे समझाने की प्रार्थना की — और शुकदेवजी, अपने मन को प्रभु में लीन किए, आगे आने वाली उससे भी अधिक अद्भुत लीला को खोलने के लिए तैयार हुए।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् विद्वानों के नहीं, प्रेमियों के निकट हैं। जिनके चरणों की धूलि अनेक जन्मों के योगियों को दुर्लभ है, वही ग्वालबालों के नित्य के खेल-साथी हैं (श्लोक 12)। प्रेममयी आत्मीयता उन्हें दीर्घ तप से भी अधिक निकट ले आती है।
2. जो उन पर भरोसा करते हैं, उन्हें संकट छू नहीं सकता। बालक कृष्ण पर विश्वास करके असुर के मुख में निर्भय चले जाते हैं; और वे, हर हृदय में बसे, उन्हें बचाने पहले से ही वहाँ हैं। विश्वास ही उनकी शरण बन जाता है।
3. प्रभु हमारे संकट में उतरकर हमें उबारते हैं। दूर से प्रहार करने के बजाय कृष्ण अपने साथियों सहित मृत्यु के मुख में प्रवेश करते हैं (श्लोक 28)। वे दूर से नहीं, हमारे संकट में साथ आकर हमें बचाते हैं।
4. शत्रु भी उनके स्पर्श से पवित्र हो जाता है। अघासुर, जो केवल मारने आया था, सब पापों से मुक्त होकर प्रभु के रूप-साम्य को पाता है (श्लोक 38)। उनकी कृपा इतनी विशाल है कि शत्रुभाव का सम्पर्क भी मुक्ति दे सकता है।
5. उनकी लीलाएँ काल और तर्क से परे हैं। बचपन की लीला का एक वर्ष बाद कहा जाना, और ऐसे असंख्य आश्चर्य, उनकी माया हैं (श्लोक 40-42)। हमें उन्हें समझाकर टालने नहीं, अपितु उनकी कथा का अमृत पीने को बुलाया जाता है।

एक भक्तिमय चिन्तन

इस अध्याय का सबसे मार्मिक क्षण असुर का वध नहीं, अपितु उससे पूर्व का वह ठहराव है, जब कृष्ण अपने साथियों को मृत्यु के मुख में गिरा देखकर 'करुणा से द्रवित' हो जाते हैं और सोचते हैं कि उन्हें कैसे बचाएँ। वे उन्हें भीतर जाने से रोक सकते थे; वे असुर को बाहर से मार सकते थे। इसके बजाय वे उनके साथ उस अन्धकार में प्रवेश करते हैं। यही भागवत भर में दिव्य प्रेम की रीति है: प्रभु हमें किसी सुरक्षित दूरी से नहीं उबारते, अपितु हमारे उसी संकट में, मृत्यु के उदर में उतरकर हमें अपने साथ बाहर ले आते हैं। बालक, अपनी ओर से, कोई चतुराई नहीं करते; वे बस विश्वास करते हैं और हँसते हुए भीतर चले जाते हैं, इस निश्चय से कि उनका मित्र उन्हें हानि न होने देगा। शायद वही बालक-सुलभ विश्वास सम्पूर्ण शिक्षा है। और यहाँ एक अन्तिम कोमलता है: जो असुर कृष्ण को निगलने आया, वही उनके स्पर्श से ज्योति में ले लिया जाता है। यदि अघासुर तक इतना पवित्र हो सका, तो कोई भी आत्मा, चाहे कितनी ही पतित क्यों न हो, उस कृपा की पहुँच से बाहर नहीं।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज ग्वालबालों के निर्भय विश्वास को अपनाएँ। जब कोई भयभीत करने वाली स्थिति सामने आए, तब केवल अपनी चतुराई पर निर्भर रहने के बजाय उसे सचेत रूप से भगवान् के हाथों में सौंप दें, यह स्मरण करते हुए कि वे आपके हृदय में बसते हैं और आपके संकट में आपके साथ प्रवेश करते हैं। अघासुर की लीला को पढ़ें या स्मरण करें, और उसे इस आश्वासन के रूप में लें कि कोई अन्धकार उसे नहीं रोक सकता जो कृष्ण का है। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह बारहवाँ अध्याय मधुरतम भोलेपन को गम्भीरतम संकट के साथ रखता है। कृष्ण और उनके साथी एक आनन्दमय वनभोज के लिए निकलते हैं, और पूतना के हत्यारे परिवार का अन्तिम असुर अघासुर उन्हें समूचा निगलने के लिए अजगर बनकर घात लगाता है। बालक, अपने मित्र पर पूर्ण विश्वास रखते हुए, मृत्यु के मुख में निर्भय चले जाते हैं; और हर हृदय में बसने वाले कृष्ण उनके साथ भीतर प्रवेश करते हैं, असुर को भीतर से नष्ट करते हैं, और अपने सब साथियों को पुनर्जीवित कर उबार लेते हैं — जबकि स्वयं असुर, प्रभु के स्पर्श से पवित्र होकर, मुक्ति में ले लिया जाता है। ब्रह्मा भी आश्चर्यचकित हैं, और व्रजवासी वह सौभाग्य चखते हैं जो बड़े-बड़े योगी नहीं पा सकते। हम भी ग्वालबालों से सीखें कि प्रभु पर निर्भय विश्वास करें, और यह स्मरण रखें कि वे हमें दूर से नहीं बचाते, अपितु हमारे हर अन्धकार में उतरकर हमें घर ले जाते हैं।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), द्वादश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-12-killing-of-aghasura-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट